

“जय जवान—जय किसान—जय विज्ञान—जय अनुसंधान”



पंत प्रसार शिक्षा



वर्ष : 19, अंक : 2

(अप्रैल—जून, 2024)

कुलपति संदेश

देश में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या को अन्न उपलब्ध करवाना कृषि वैज्ञानिकों के लिए सदैव से महत्वपूर्ण चुनौती बनी रही है। वर्ष दर वर्ष सिकुड़ती कृषि भूमि और पर्यावरण असंतुलन अपेक्षित उद्देश्य



प्राप्ति को और कठिन बना देती है। इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि प्रति इकाई क्षेत्रफल से कृषि उत्पादन को बढ़ाने के साथ ही कृषकों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य मिले। कृषि उत्पादों के विदेश में निर्यात की मांग में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि उपज वृद्धि के साथ—साथ उत्पादों की गुणवत्ता में भी वृद्धि हो। ऐसा करने से भारत विश्व के अन्य देशों से मुकाबला करने में सक्षम हो सकेगा। आप सभी भिज्ञ होंगे कि गत वर्ष 2023 को पूरे विश्व में “अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष” के रूप में मनाया गया। उत्तराखण्ड की धरोहर के रूप में पहचान बनाती इन फसलों की पोषण महत्वा को देखते हुए आइये हम सभी कधे से कधा मिलाकर मिलेट्स के बारे में जागरूकता, भोजन थाली में “श्री अन्न” का समावेश और इनके पौष्टिक गुणों के बारे में प्रचार—प्रसार करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय से प्रकाशित पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” अंक: अप्रैल—जून, 2024 कृषि से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं व कृषकों हेतु लाभकारी होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु डा० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा व डा० बी०डी० सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) व सभी सहयोगी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मैंने लिखा है
(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषकगण कठिन व प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन—यापन करने के लिए जाने जाते हैं। कृषि उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि हेतु कुछ समस्याएं यथा “पश्चरीली” व कम उपजाऊ मूदा, ढालू व सीढ़ीनुमा खेत, सीमित सिंचाई के साधन, तकनीकों का अभाव के साथ—साथ जनसंख्या वृद्धि, पलायन, पारिस्थितिकी असंतुलन इत्यादि हैं। इन समस्याओं के यथोचित निराकरण पर ही पर्वतीय कृषि का भविश्य आधारित है। इन क्षेत्रों की पारिस्थितिकी संतुलन को भी दृष्टिगत रखते हुए काश्तकारों के आर्थिकी में सुधार के साथ निरन्तर हो रहे पलायन को रोकने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिए यथाशीघ्र उन्नत कृषि तकनीक की कार्य योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारने की आवश्यकता प्रतीत होती है।



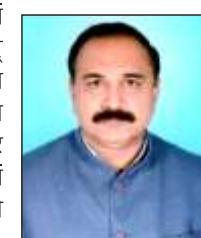
पूरे देश में स्थापित कुल 11 अटारी अपने—अपने क्षेत्रों में तकनीक हस्तान्तरण में महती भूमिका निभा रहे हैं। अपनी समृद्ध गरिमा संजोये पंतनगर विश्वविद्यालय तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्र कृषकों के उत्थान हेतु सतत प्रयत्नशील है। यहाँ के वैज्ञानिक, जनपद के सम्बन्धित अधिकारियों के साथ मिलकर दूरस्थ क्षेत्र के कृषक समुदाय के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर कार्य कर रहे हैं। कृषक के लिये उपयोगी त्रैमासिक पत्रिका “पंत प्रसार संदेश” एक ज्ञानवर्धक पत्रिका है। इसके प्रकाशन समिति के सभी सदस्य प्रशंसा के पात्र है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(डा० जे०पी० मिश्रा)

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-II, जोधपुर (राजस्थान)

उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के दृष्टिगत राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, एन.जी.ओ. तथा कृषि आधारित रेखीय विभागों पर कृषि उत्पादकता में वृद्धि व सुदूर पर्वतीय अंचल में खेती के परम्परागत तरीके को विकसित तकनीक से जोड़ने का सामूहिक दायित्व है। यहाँ यह उल्लेखित करना समीचीन होगा कि उत्तराखण्ड में प्रचुर मात्रा में उत्पादित होने वाले मंडुवा, उगल, नौरंगी, गहत, भट्ट इत्यादि के वृहद् प्रचार—प्रसार से इन उत्पादों को बेहतर बाजार मिलेगा। जन समुदाय को रसायन मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराने हेतु मा. प्रधानमंत्री जी ने “प्राकृतिक खेती” अपनाने पर बल दिया है, उस पर भी ध्यान केन्द्रित करते हुए इस नयी विधा को सरल और सुगम बनाने की आवश्यकता है। विकसित कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्रों में अवस्थित कृषकों तक ले जाना चुनौतीपूर्ण होता है। इस कार्य को विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र अपने क्षेत्र के अटारी के सहयोग से बखूबी निभा रहे हैं।



पंतनगर विश्वविद्यालय एवं आनुशंसिक कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के उन्नयन हेतु विविध कार्यक्रम यथा— मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, औषधीय व सगंध पौधों की खेती, गुणवत्तायुक्त पौध उत्पादन व वितरण, जैविक कृषि की प्रेरणा इत्यादि का सफल संचालन कर रहे हैं। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखण्ड) द्वारा “पंत प्रसार संदेश” पत्रिका के अंक : अप्रैल—जून, 2024 का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(डा० अंजनी कुमार)

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-IV, पटना (बिहार)

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जुलाई-सितम्बर

जुलाई : मैदानी क्षेत्र-फसल

धान : फसल की रोपाई इस माह में तथा सीधी बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक कर लें। उर्वरक एवं खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

गन्ना : जलभारव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें। फसलों को गिरने से बचाने के लिए जड़ों पर पर्याप्त मिट्टी चढ़ायें तथा बढ़वार अच्छी होने पर 05 फीट की ऊँचाई पर बँधाई कर लें। पाइरिला, चोटी बेधक अथवा तना बेधक कीट की रोकथाम के लिए संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायनों का प्रयोग करें।

मक्का : फसल में यथासमय निराई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें तथा दो फीट ऊँची होने पर यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।

सोयाबीन, उर्द, मूँग एवं अरहर : सोयाबीन की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह में, उर्द व मूँग की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में पूरी कर लें। जून में बोयी गयी अरहर की फसल में विरलीकरण करें व निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

तिल एवं मूँगफली : तिल की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा मूँगफली की बुवाई माह के मध्य तक कर लें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, झांगोरा, काकुन एवं रामदाना : आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण करें। वर्षा के पश्चात् पर्याप्त नमी होने पर प्रति नाली 0.9 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। मंडुवा, झांगोरा एवं काकुन में झाँका रोग लगने पर संस्तुति के अनुसार जैव नियंत्रक अथवा फफूँदीनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अरहर, सोयाबीन, उर्द, मूँग, नौरंगी (राइसबीन), गहत एवं राजमा : सोयाबीन, अरहर, गहत, नौरंगी एवं राजमा में विरलीकरण करें तथा निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। उर्द एवं मूँग की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें।

धान : धाटी वाले क्षेत्रों में रोपाई माह के प्रथम सप्ताह तक अवघ्य कर लें। चेतकी/ जेठी धान में निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें तथा वर्षा के पश्चात् उपयुक्त नमी होने पर 1.25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली की टॉप ड्रेसिंग करें। रोपित धान में खेरा अथवा झाँका रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

टमाटर : बुवाई हेतु उन्नत संकर किस्मों का चुनाव करें। आखिरी जुताई के समय नन्त्रजन-फास्फोरस-पोटाश 160:80:80 कि.ग्रा. /हैक्टेयर का छिड़काव करें। फफूँदी जनित रोग नियंत्रण हेतु जैव नियंत्रक- ट्राइकोडर्मा एवं स्यूडोमोनास 10 ग्राम/ लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन : अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये पौध रोपण का कार्य माह के प्रथम पखवाड़े में 60x60 सेमी. की दूरी पर करें। रोपण सायंकाल में करें तथा उसके बाद हल्की सिंचाई करें।

मिर्च : फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। आगामी फसल के लिए इस माह में पौध की रोपाई 60x45 सेमी. की दूरी पर करें।

फूलगोभी : अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत का चुनाव करें। खेत की अच्छी तरह तैयारी कर 50g30 सेमी. की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

मूली : अगेती फसल प्राप्त करने के लिए ऊँचे स्थान पर मूली की बुवाई की जाती है। इसके लिए 30 सेमी. की दूरी पर हल्की सी मेड़ बनायें तथा उन पर 10-15 सेमी. की दूरी पर बीज बोयें।

भिण्डी, लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसलों में अवांछित पौधों निकालें।

ग्वार एवं शकरकन्द : फलियों को थोड़ी कच्ची अवस्था में तोड़कर बाजार भेजे व शकरकन्द की 60 सेमी. पर रोपाई करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू : तैयार फसल की खुदाई करें तथा खड़ी फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें।

टमाटर : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम-45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन : फसल में निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। फल तथा तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : फसल में निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें, तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। कीट-रोग नियंत्रण की पूरी तैयारी रखें।

पालक, धनियाँ, मेथी : पत्तियों की कटाई कर छोटे-छोटे बंडल बनाकर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व पत्तियों पर पानी का छिड़काव करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : नए बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। नरसरी में वीनियर कलम बांधना प्रारम्भ करें।

केला : अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पेड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें। फल वाले पेड़ों को गिरने से बचाव हेतु सहारा दें। नए बाग की रोपाई हेतु तलबार के बकल वाली पुतियों का चयन करें।

नीबूवर्गीय फल : बाग लगाने का कार्य प्रारम्भ करें। केंकर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अमरुद : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग में जल निकास का प्रबन्ध करें। फल विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

लीची : नए पौधे तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह अवघ्य समाप्त कर लें।

आवंता : बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें एवं जल निकास की व्यवस्था करें।

आडू व आलूबुखारा : भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब : बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

नाशपाती : कज्जली धब्बा व फायर ब्लाइट रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

आडू, आलूबुखारा एवं खबानी : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। भूरा विगलन रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र-फल

धान : रोपित धान में निराई कर संस्तुति के अनुसार नन्त्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें। फसल में झाँका, खेरा व जीवाणु झुलसा रोग तथा तना बेधक कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायन का प्रयोग करें।

गन्ना : पहली बैंधाई के 50 सेमी. ऊपर दूसरी बैंधाई कर लें। इसमें दो पंवितयों के तीन थानों की बैंधाई एक साथ (कैंची बैंधाई) की जाती है।

मक्का : फसल में नरमंजरी निकलते समय कुल नन्त्रजन की मात्रा का एक तिहाई भाग (30-35 कि.ग्रा./हैक्टेयर) की टॉप ड्रेसिंग कर दें।

उर्द एवं मूँग : इन फसलों में 20-25 दिन की अवस्था पर निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। तना मक्खी के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, झांगोरा, काकुन एवं रामदाना : मंडुवा, झांगोरा एवं काकुन में तना छेदक तथा रामदाना में पर्जालक कीट (लीफ वेबर) का प्रकोप

पंत प्रसार संदेश

होने पर संस्तुति के अनुसार कीटनाषी रसायन का छिड़काव करें।

सोयाबीन : आवश्यकतानुसार निराई कर खरपतवार निकाल लें तथा फसल में कमला कीट, तना छेदक मक्खी तथा चक्र भष्ण (गर्डिल बीटिल) कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : फसल में नर मंजरी निकलते समय संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।

धान : सिंचित/असिंचित फसल में तना छेदक कीट एवं झाँका रोग तथा असिंचित धान में कुरमुला कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें। सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग एवं असिंचित धान में यूरिया के 02 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, नौरंगी, गहत एवं राजमा : फसल में पर्ण धब्बा रोग लगने पर संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

टमाटर व बैंगन : टमाटर में फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन, झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम-45 तथा बैंगन में संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च : पौधों की वृद्धि अच्छी नहीं है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें। कीटों तथा बीमारियों से फसल का बचाव करें।

फूलगोभी : 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से खड़ी फसल में डालें। मध्यकालीन गोभी की फसल के लिए खेत की आखिरी जुताई पर 100:80:80 के अनुपात में नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें व 45x45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

मूली : पुरानी फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल की बोआई करें।

भिण्डी व लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजें। फलियों की तुड़ाई 48 घंटे के अन्तराल में करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

आलू एवं टमाटर : टमाटर में झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें। तैयार आलू की खुदाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।

बैंगन : फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन का घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम-45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

पालक, धनिया, मेथी : तैयार पत्तियों की कटाई कर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व छटाई करें व छोटी-छोटी गड़ियाँ बना लें।

फूलगोभी, पातगोभी : तैयार फसल की कटाई कर बाजार भेजें। नयी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

अदरक, हल्दी : तैयार अदरक की खुदाई कर साफ करें व बाजार भेजने की व्यवस्था करें। यदि फसल की वृद्धि अच्छी नहीं हो रही है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया/हैक्टेयर खड़ी फसल में डालें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : बाग लगाने के लिए पौधों की रोपाई करें। पौधशाला में मूलवृत्त तैयार करने के लिए गुठलियों की बुआई करें। नए पौधे तैयार करने के लिए एक वर्ष पुराने मूलवृत्तों पर वीनियर कलम बांधें।

केला : जल निकास की व्यवस्था करें, अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पके घारों की तुड़ाई करके बाजार भेजें।

अमरुद : परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। गूटी बांधने का कार्य इस माह पूर्ण करें।

पपीता : पौधशाला में बीजों की बुआई करें। तने पर बोर्डे लेप करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र-फल

आम एवं नीबूवर्गीय फल: पेड़ों पर ब्लाइटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के

घोल का छिड़काव करें।

सेब एवं नाशपाती : थालों को साफ रखें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें। ब्लाइटॉक्स 50 का 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें।

आड़, आलूबूखारा एवं खुबानी : फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-फसल

धान : फसल में बालियाँ बनने की अवस्था पर नत्रजन की संस्तुत मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें। तना बेधक, फुदका कीट एवं पर्ण भित्ती व जीवाणु झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं दूसरी बँधाई कर लें। कंडुवा एवं लाल सड़न रोग से ग्रसित पौधों को निकालकर जला दें। बरदकालीन गन्ने की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें तथा इसके साथ अन्तःफसल के रूप में आलू, लाही (तोरिया), राई, सब्जी मटर, मूली, गोभी, लहसुन, धनियाँ की बुवाई करें।

उर्द एवं मूंग : पिछले माह बोयी गयी फसल में निराई-गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करें। फसल को पीला मौजेक अथवा थ्रिप्स कीट से क्षति होने पर संस्तुत कीटनाषक का प्रयोग करें।

सोयाबीन : जल भराव की स्थिति में जल-निकास की व्यवस्था करें तथा वर्शा न हो तो फली बनते समय हल्की सिंचाई करें।

अरहर : फसल में लपेटक, फली छेदक कीट अथवा बांझा रोग की समस्या आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही) एवं राई / सरसों : तोरियाँ की बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में कर लें। तिलहनी फसलों में गंधक 25-30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-फसल

मंडुवा, झांगोरा, काकुन एवं रामदाना : निम्न एवं मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसलों की कटाई कर लें। देर से पकने वाली प्रजातियों में कीट एवं रोगों के बचाव हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

सोयाबीन एवं अरहर : सोयाबीन में कमला कीट, तना छेदक अथवा चक्रभष्ण कीट तथा अरहर में पत्ती लपेटक अथवा फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : घाटी, कम व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसल की कटाई कर लें तथा ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनने की अवस्था पर हल्की सिंचाई करें व रोग तथा कीट नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

धान : घाटियों व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में चेतकी/जेठी/रोपित धान की फसल तैयार होने पर कटाई कर लें। मध्यम व ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा फसल में रोग अथवा कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, गहत, नौरंगी एवं राजमा : उर्द, मूंग एवं गहत की तैयार फसल की कटाई कर लें। नौरंगी एवं राजमा की फसल में कीट अथवा रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायन का छिड़काव करें।

तोरिया एवं पीली सरसों : घाटियों एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रोपित धान तथा निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मंडुवा, झांगोरा, काकुन, उर्द व मूंग की कटाई के पश्चात माह के अंत तक इन फसलों की बुवाई करें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-सब्जी

टमाटर : अच्छी पैदावार के लिए इस माह में पौधों का रोपण सायंकाल में 50x50 सेमी. की दूरी पर करें। खेत की आखिरी जुताई पर 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 80 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

बैंगन, मिर्च, भिण्डी एवं लोबिया : इन फसलों में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें व पके फलों से बीज निकालकर सुखायें।

फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी : खड़ी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया

प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। मध्यकालीन फूलगोभी की रोपाई के पूर्व आखिरी जुताई पर 75 कि.ग्रा. नत्रजन, 100 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर डालें।

आलू : खेत की आखिरी जुताई पर 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 80 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर डालकर इस माह के आखिरी सप्ताह में अगेती आलू की बोआई करें।

पालक, धनियाँ, मेथी : इस माह अगेती किस्मों की बोआई की जा सकती है। खेत की अच्छी तरह तैयारी करें तथा बाद में 50:60:60 के अनुपात में नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-सब्जी

टमाटर : झूलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम-45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च / शिमला मिर्च : निराई—गुड़ाई व सिंचाई करें। फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजें।

भिण्डी / लोबिया : फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। पकी फलियों का बीज निकालकर सुखायें।

मटर : इस माह मटर की अगेती प्रजातियों की बोआई की जा सकती है।

खीरावर्गीय फसलें : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। यदि कीटों का आक्रमण दिखाई दें तो 0.2 प्रतिशत सेविन का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र-फल

आम : नए बाग की रोपाई का कार्य पूरा कर लें। बाखा गांठ कीट की रोकथाम हेतु रोगोर (0.2 प्रतिशत) व घ्याम वर्ष रोग हेतु ब्लाइटॉक्स 50 का छिड़काव करें। पछेती किस्मों की गुरुलियों को इकट्ठा करके पौधशाला में बुआई करें।

नीबूवर्गीय फल : पेड़ों में नत्रजन व पोटाश की तीसरी मात्रा का प्रयोग करें। सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए उनका छिड़काव करें।

लीची : तना छेदक कीट की रोकथाम के लिए रुई को पेट्रोल में भिगोकर छिद्रों में भर दे तथा इन छिद्रों को गीली भिट्टी से बंद कर दें।

कटहल : पके फलों के बीजों को निकाल कर बुआई करें। नए बाग लगाने के लिए रोपण का कार्य करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र-फल

सेब : पछेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। नर्सरी के बीजू पौधों पर टी-चम्पा चढ़ाएं। रुइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें।

नाशपाती : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। रुइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें।

आड़ु एवं आलूबुखारा : पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा 23 हैक्टेयर क्षेत्रफल में 350 कृषकों के यहां अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अनुकरणीय परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं। केन्द्र द्वारा मुर्गी पालन पर 05 दिवसीय स्वरोजगारपरक प्रशिक्षण का आयोजन कर 18 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 11 कृषि गोष्ठियों का आयोजन करते हुए 542 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो.व. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, डा. परविन्दर स्योरेन, निदेशक, अटारी-लुधियाना, डा. लक्ष्मीकान्त, निदेशक, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा एवं डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा दिनांक 10.06.2024 को केन्द्र का भ्रमण किया गया।

गया। भ्रमण के दौरान कुल प्रति महोदय तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा जनप्रद आधारित कृषि तकनीक के हस्तान्तरण का



सलाह दिया।

मा. कुलपति महोदय का केन्द्र पर भ्रमण गया। इसके पूर्व डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने दिनांक 23.04.2024 को केन्द्र का भ्रमण कर कीवी प्रक्षेत्र का जीर्णधार प्रक्षेत्र पर गहत, काला भट्ट, मंडुवा की खेती करने हेतु निर्देश दिये।

- केन्द्र द्वारा दिनांक 23.04.2024 को मृद्वा स्वारस्थ्य दिवस आयोजन एवं दिनांक 18.06.2024 को केन्द्र पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा पी.एम. किसान सम्मान योजना के अन्तर्गत 17वीं किस्त का हस्तान्तरण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया।
- परियोजना निदेशक, अतमा, मुंगेर, बिहार से आये कृषकों को पोषक अनाज मिलेट्स पर प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 17-19 जून, 2024 को आयोजित किया गया, जिसमें कृषकों को मोटे अनाजों का महत्व, इनकी वैज्ञानिक खेती एवं मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के विधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- इस अवधि में केन्द्र द्वारा कृषकों/ग्रामीण युवाओं/प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु कुल 48 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 10006 कृषकों/ग्रामीण युवाओं/प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम तकनीकों की मृदा नमूना एकत्रीकरण विधि पर स्कूली बच्चों का प्रशिक्षण जानकारी देते हुए प्रशिक्षित किया गया।



- प्रक्षेत्र परीक्षण के अन्तर्गत कृषि वानिकी में धान वी.एल. 69 एवं धान वी.एल. 88 पर 0.64 है. क्षेत्रफल में 05 परीक्षण, सरस्य विज्ञान के अन्तर्गत धान 0.2 है. एवं मंडुवा 0.2 है. में जैव उर्वरक के प्रयोग से पोषण प्रबन्धन पर 10 परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में सोयाबीन पर 2.0 है. में 36 प्रदर्शन, उर्द पर 2.0 है. में 34 प्रदर्शन व मंडुवा पर 5.0 हैक्टेयर में 50 प्रदर्शन तथा झंगोरा पर 5.0 हैक्टेयर में 50 प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र पौधशाला में कृषकों को उन्नत प्रजाति के टमाटर, पत्तागोभी, मैरो कद्दू शिमला मिर्च, मिर्च इत्यादि के सब्जी पौध उपलब्ध कराये गये तथा केन्द्र प्रक्षेत्र में जय गोपाल प्रजाति के केंचुओं की वर्मी कम्पोस्टिंग इकाई की स्थापना की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों पर कुल 25 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 500 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत सोयाबीन, धान, मंडुवा, झंगोरा,

पंत प्रसार संदेश

- मक्का तथा पोषण वाटिका पर कुल 393 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 48 हेठो क्षेत्रफल में प्रदर्शन लगाया गया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन तिलहन के अन्तर्गत सोयाबीन के 10 हेठो क्षेत्रफल में प्रदर्शन लगाये गये। औन्फार्म ट्रायल के अन्तर्गत उद्यान एवं सर्स्य विज्ञान विषय के 05 परीक्षण लगाये गये।
- मोटे अनाजों के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय पर दो गोशिथियों का आयोजन कर प्रतिभागियों को मोटे अनाजों की महत्ता तथा मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे मंडुवा नमकीन, चकली, बाजरा लड्डू व बर्फी इत्यादि के बारे में जानकारी दी गयी। इसी क्रम में, राज्य मिलेट मिशन योजना के अन्तर्गत तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्राकृतिक खेती विषय पर दो दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर कृषकों को लाभान्वित किया।
 - जनपद के अनेक छात्र-छात्राओं ने केन्द्र का भ्रमण कर कृषि सम्बन्धी नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त की। दिनांक 18.06.2024 को केन्द्र पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा पी.एम. किसान सम्मान योजना के अन्तर्गत 17वीं किस्त का हस्तान्तरण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 05 जून 2024 को केन्द्र एवं आई.टी.बी.पी. लोहाघाट द्वारा संयुक्त रूप से मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र पर विभिन्न प्रजाति के बुरांश एवं बॉझ के पौधों का रोपण किया गया।
 - निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. जितेन्द्र क्वात्रा की अध्यक्षता में टनकपुर में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लाभार्थियों को धान की उन्नत प्रजाति का बीज भी वितरित किया गया।
 - केन्द्र पर 12वीं प्रसार सलाहकार समिति का आयोजन दिनांक 28-29 जून, 2024 को डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो.ब. पन्त कृषि एवं पौ.वि.वि.पन्तनगर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के आय संवर्धन हेतु गहन विचार-विमर्श किया गया।



प्रसार सलाहकार समिति की 12वीं बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- प्रशिक्षण के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 19 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 363 कृषकों को लाभान्वित किया गया। इसी प्रकार प्रसार कार्य कर्ता औं, ग्रामीण युवाओं एवं प्राकृतिक खेती के विस्तार विषयक एक-एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
- अग्रिम पंक्ति पदशान के प्राकृतिक खेती के विस्तार पर प्रशिक्षण अन्तर्गत गेहूँ के 6.0 हैं। में 20 प्रदर्शन, सरसों के 10 हैं। में 25 प्रदर्शन, मसूर के 05 हैं। में 25 प्रदर्शन, बैकर्यार्ड कुक्कुट पालन में 25 तथा दलहन चारा उत्पादन में 3.0 हैं। में 25 प्रदर्शन आयोजित किये गये। पोषक तत्वों के प्रयोग से पशुओं के स्वास्थ्य,



अन्तर्गत गेहूँ के 6.0 हैं। में 20 प्रदर्शन, सरसों के 10 हैं। में 25 प्रदर्शन, मसूर के 05 हैं। में 25 प्रदर्शन, बैकर्यार्ड कुक्कुट पालन में 25 तथा दलहन चारा उत्पादन में 3.0 हैं। में 25 प्रदर्शन आयोजित किये गये। पोषक तत्वों के प्रयोग से पशुओं के स्वास्थ्य,

उत्पादकता एवं जनन तंत्र में वृद्धि हेतु 30 तथा बकरियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु 40 एवं गुणवत्तायुक्त संतुलित आहार द्वारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु 30 प्रक्षेत्र प्रदर्शन आयोजित किये गये।

- प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत बीजामृत तथा जीवामृत बनाने पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र हरिद्वार में दिनांक 14-15 जून 2024 को आयोजित राज्य स्तरीय कार्ययोजना कार्यशाला तथा दिनांक 28-29 जून 2024 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट में आयोजित 12वीं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनोरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा गन्ने के अवशेषों का मल्वर द्वारा प्रबंधन, गन्ने में खरपतवार नियंत्रण, आम में गोंद व डाईबैक की समस्या, गन्ने में नए खरपतवार नाशियों का उपयोग तथा बासमती धान की पी.बी. 1692 प्रजाति का परीक्षण एवं मूल्यांकन किया गया है। घरेलू खाद्य सुरक्षा, दुधारू पशुओं में कृमि नाशकों के उपयोग से स्वास्थ्य में सुधार तथा पुरानी प्रजातियों के कारण बासमती धान की उत्पादकता में कमी पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए हैं। वैज्ञानिकों द्वारा कुल 12 प्रशिक्षण आयोजित कर 243 कृषक तथा प्रसार कर्मियों को लाभान्वित किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्रों की राज्य स्तरीय कार्य योजना कार्यशाला दिनांक जून 14-15, 2024 का आयोजन अटारी, लुधियाना तथा प्रसार शिक्षा निदेशालय, गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी की विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्रों की राज्य स्तरीय कार्ययोजना कार्यशाला पंतनगर के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान अधिकारी व वैज्ञानिकगण केन्द्र का भ्रमण किये। केन्द्र पर इस दौरान बकरी पालन इकाई तथा जय गोपाल जैविक खाद उत्पादन इकाई की स्थापना की गई।



कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत मडुवा की दो प्रजातियों (पी.एल. मडुवा-172, वी.एल. मडुवा-352) का 03 है। में 20 प्रदर्शन, मक्का हाइब्रिड (मेज-9144 तथा कंचन के-65) प्रजाति के 10 हैं। में 35 प्रदर्शन लगाये गये। पोषण वाटिका के कृषकों को कद्दूर्वार्गीय, गोभी, हरी मिर्च, शिमला मिर्च आदि सब्जियों के पौध वितरित किये गये।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिससे 42 कृषक लाभान्वित हुए। आर्या परियोजना के अन्तर्गत आय उपार्जन हेतु महिलाओं को सिलीकोन शोभाकारी मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
- विशेष दिवस कार्यक्रम आयोजन के अन्तर्गत केन्द्र पर विश्व पर्यावरण दिवस (05.06.2024) को आयोजित किया गया। पी.एम. किसान सम्मान दिवस का सीधा प्रसारण तथा उपस्थित कृषकों को उन्नत कृषि तकनीक अपनाने का सलाह दिया गया। राजभवन नैनीताल में दिनांक 31.05.2024 को अन्तर्राष्ट्रीय मौन दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक कृषकों ने भागीदारी की तथा

उत्कृष्ट मौन पालकों को माननीय राज्यपाल महादय, उत्तराखण्ड द्वारा सम्मानित किया गया।



- कृषि विज्ञान केन्द्र हरिद्वार में विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम— जून 05, 2024 दिनांक 14—15 जून 2024 को आयोजित राज्य स्तरीय कार्ययोजना कार्यशाला तथा दिनांक 28—29 जून 2024 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट में 12वीं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- अन्य प्रसार गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा कुल 25 प्रसार कार्यक्रम यथा समूह बैठक, वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण, कृषकों द्वारा केन्द्र पर भ्रमण, कार्यशाला, किसान गोष्ठी, कृषि प्रदर्शनी इत्यादि द्वारा कुल 344 कृषकों को लाभान्वित किया गया। मोबाइल एग्रो एडवाइजरी सर्विसेस के अन्तर्गत 215 कृषि संदेशों द्वारा 500 कृषकों को उनके मोबाइल पर सन्देश भेजे गये तथा कृषि सम्बन्धित समस्याओं का समाधान किया गया। केन्द्र की गतिविधियों की सूचना 09 प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंगा एंचोली (पिथौरागढ़)

- प्रशिक्षण के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा कुल 36 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 769 कृषकों को लाभान्वित किया गया। वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण आयोजन द्वारा 21 प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित किया गया।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन अन्तर्गत धान—15 है, सोयाबीन—3 है, मंडुआ—10 है, व मक्का—1 है, में लगाये गये हैं। इसके साथ ही केन्द्र पर मधुमक्खी के 10 बक्से प्रदर्शन के रूप में लगाये गये।
- वैज्ञानिकों ने दिनांक 30 अप्रैल से 01, मई 2024 को पंतनगर में आयोजित जय गोपाल वर्मी कल्चर प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। प्रभारी अधिकारी व विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा दिनांक 14—15 जून, 2024 को आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्रों की कार्ययोजना कार्यशाला हरिद्वार तथा लोहाघाट में आयोजित 12वीं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में भी वैज्ञानिकों द्वारा भाग लिया गया।
- वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर अनेक कृषकों को कृषिगत जानकारी प्रदान की गयी। केन्द्र पर संचालित गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने हेतु किसानों द्वारा केन्द्र पर भ्रमण किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 04 रेडियो वर्ता तथा दैनिक समाचार पत्रों में प्रचार—प्रसार हेतु 17 तकनीकी विश्व मधुमक्खी दिवस कार्यक्रम— मई 20, 2024 समाचार प्रकाशित किये गये। विश्व मधुमक्खी दिवस कार्यक्रम दिनांक 20 मई 2024 को आयोजित किया गया, जिसमें 24 आई.टी. बी.पी. जवानों सहित अनेक कृषकों ने प्रतिभाग किया।



विश्व मधुमक्खी दिवस कार्यक्रम— मई 20, 2024 समाचार प्रकाशित किये गये। विश्व मधुमक्खी दिवस कार्यक्रम दिनांक 20 मई 2024 को आयोजित किया गया, जिसमें 24 आई.टी. बी.पी. जवानों सहित अनेक कृषकों ने प्रतिभाग किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखघार (झद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 04 प्रदर्शन, 03 अनुकरणीय परीक्षण आयोजित किये गये। वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती विषयक 03 प्रशिक्षण एवं एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- केन्द्र में कुकुट पालन इकाई की निदेशक, वि.प.कृ.अ.सं., अल्मोड़ा का भ्रमण स्थापना की गयी, जिसमें कुकुट की एक नई प्रजाति (ग्राम प्रिया) को अंडों के लिए पाला जा रहा है। कम लागत वाली मधुमक्खी पालन इकाई की स्थापना, 05 नवे मिट्टी के छतों का निर्माण के साथ—साथ दिनांक 20 मई 2024 को केन्द्र में विश्व मधुमक्खी दिवस मनाया गया।
- प्रक्षेत्र पर पॉलीहाउस में टमाटर की हिमसोना, खीरा की अवीवा, शिमला मिर्च की कैलीफोर्निया वॉण्डर का प्रदर्शन संचालित है। इसी क्रम में पॉलीहाउस के बाहर बैंगन, फैंचबीन, भिन्डी, छप्पन कद्दू मटर के प्रदर्शन आयोजित किये गये हैं।
- दिनांक 09.05.2024 को डा. लक्ष्मीकान्त, निदेशक, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा एवं वहां के अन्य वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र का भ्रमण कर आवश्यक सुझाव दिये गये। वैज्ञानिकों के दल को प्रगतिशील कृषक श्री कपिल शर्मा के ग्राम—तिमरिया का भ्रमण भी कराया गया।



कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत औयस्टर मशरूम उत्पादन, पोषण वाटिका, मत्स्य विज्ञान आदि विषयों के 8.5 हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं। ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गन्ने में विभिन्न शाकनाशी का मूल्यांकन, प्याज के साथ गैंदा की सहफसली खेती, मछली के विकास के लिए उच्च गुणवत्ता के राशन का प्रयोग, मत्स्य विकास को बढ़ावा देने हेतु प्राथमिक उत्पादकता में वृद्धि जैसे परिक्षण संचालित हैं।
- प्रशिक्षण के अन्तर्गत ग्रामीण युवाओं हेतु 09 प्रशिक्षण तथा नर्सरी वर्कर रिक्ल डललेपमेंट प्रशिक्षण का आयोजन कर लगभग 207 प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित किया। कृषि गोष्ठी के अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा 03 कार्यक्रम आयोजित कर 666 कृषकों को लाभान्वित किया गया। कृषि गोष्ठी के अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा 03 कार्यक्रम आयोजित कर 666 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। दिनांक 18.06.2024 को केन्द्र पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा पी.एम. किसान सम्मान योजना के अन्तर्गत 17वीं किस्त का हस्तान्तरण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया।
- प्रभारी अधिकारी व विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा दिनांक 14—15 जून, 2024 को आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्रों की कार्ययोजना कार्यशाला हरिद्वार तथा लोहाघाट में आयोजित 12वीं विस्तार सलाहकार समिति की बैठक में भी वैज्ञानिकों द्वारा भाग लिया गया।
- केन्द्र पर विश्व पर्यावरण दिवस जून 05, 2024 कार्यक्रम के साथ—साथ कृषकों को नवीनतम कृषि तकनीक के बारे में जागरूक करने हेतु 14 व्याख्यान, 03 टी.वी. शो, 04 समाचार पत्र तथा



वैज्ञानिकों के भ्रमण द्वारा कृषकों के 42 समस्याओं का समाधान किया गया।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए "श्रीअन्न ग्राम कार्यक्रम" के तहत मई के अन्तिम सप्ताह में नैनीताल जनपद की कृषक महिलाओं को मंडुआ के बीज वितरित किए। वैज्ञानिकों ने मोटे अनाज के पोषण सम्बन्धी महत्वा और उनको आहार में शामिल कर स्वास्थ्य लाभ के बारे में भी बताया।
- मई मध्य में नैनीताल जनपद की कृषक महिलाओं के लिए "आयरन युक्त चिवड़ा नमकीन" एवं "ड्राफिटिंग" विषय पर प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के बैग के लिए ड्राफिटिंग तैयार करना एवं घर में उपलब्ध बेकार कपड़े के उपयोग द्वारा लैपटॉप बैग, शॉपिंग बैग एवं विभिन्न आकारों के पाउच बनाना सिखाया गया।
- वैज्ञानिकों द्वारा जून माह में स्वयं सहायता समूह की कृषक महिलाओं और किशोरियों के लिए "मधुमेह" पर पोषण जागरूकता, "बच्चों में कुपोषण" पर पोषण जागरूकता कार्यक्रम, "वर्षा जल संचयन" एवं "प्रिंटिंग तकनीक" पर प्रशिक्षण आयोजित किये गये।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित उन्नत मत्स्य उत्पादन एवं मत्स्य मूल्यवर्धित उत्पाद विषयक तीन दिवसीय 10 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया।
- महाविद्यालय द्वारा लगभग 96.07 लाख मत्स्य कार्प उत्पादित एवं उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि के मत्स्य पालकों को 6.55 लाख मत्स्य बीज उपलब्ध कराये गये।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

- एटिक सलाहकार समिति की बैठक- कुलपति महोदय की अध्यक्षता में एटिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन दिनांक मई 11, 2024 को आयोजित किया गया। बैठक में गत वर्षों की उपलब्धियां तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया गया।
- हनी उत्सव का आयोजन- प्रसार शिक्षा एवं शोध निदेशालय द्वारा "हनी उत्सव" का आयोजन दिनांक 31 मई, 2024 को राजभवन नैनीताल में किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा मौन पालन से सम्बन्धित विकसित तकनीक का प्रदर्शन, कृषि गोष्ठी का आयोजन एवं मौन पालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील कृषकों को माननीय राज्यपाल एवं कुलपति महोदय द्वारा सम्मानित किया गया।



- प्रसार सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन- कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट में दिनांक जून 28–29, 2024 को माननीय कुलपति महोदय की अध्यक्षता में प्रसार सलाहकार समिति के बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारी, विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता तथा निदेशक अपने-अपने विभाग से सम्बन्धित प्रमुख गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण करते हुए अनेक कृषकोपयोगी तकनीकों के बारे में जानकारी दी। कुलपति महोदय ने विशेष रूप से अपील की कि विश्वविद्यालय को पर्वतीय क्षेत्र के कृषकों हेतु ऐसी तकनीक विकसित करें, जिससे दूरस्थ क्षेत्र में बैठे कृषक इनसे लाभान्वित हो सकें।

समन्वित कृषि प्रणाली इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट पर्यावरण अनुकूल कृषि मॉडल इकाई का आदर्श नमूना है। इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर टमाटर, मिर्च, बैंगन, जैविक खेती प्रणिक्षण- प्रतिभागियों का जैविक प्रक्षेत्र भ्रमण कदद्वार्गीय सब्जियों के प्रदर्शन आयोजित किये जा रहे हैं। मृदा सुधार हेतु ढँचा, लोबिया के प्रदर्शन लगाये गये हैं। इस इकाई में उपलब्ध मानव संसाधनों के सदुपयोग से परिसर वासियों को ताजी व रसायन मुक्त सब्जियों की उपलब्धता हो रही है, साथ ही आस-पास के क्षेत्रों के कृषकों को सब्जियों की पोषण उपलब्ध कराई जा रही है। आगन्तुकों एवं प्रशिक्षण दौरान आये हुए युवाओं को यह इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है।



समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल दो प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में कृषि विभाग के अधिकारी, आतंमा के अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 52 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आगामी त्रैमास (जुलाई-सितम्बर, 2024) में आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जुलाई 10–13, 2024
2.	आय वृद्धि हेतु कुकुट पालन	जुलाई 24–27, 2024
3.	मूल्यवर्धन से आय अर्जन	अगस्त 08–10, 2024
4.	उन्नत बकरी पालन	अगस्त 21–23, 2024
5.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 26–28, 2024

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल बारह प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 420 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय पशुपालन प्रबन्धन इत्यादि से सम्बन्धित थे। प्रशिक्षणों से संस्थागत शुल्क के रूप में प्राप्त धनराशि किसान मेला चक्रीय निधि खाते में जमा की गयी।

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) की गतिविधियाँ

भ्रमण पर आये 240 कृषकों/आगन्तुकों को एकल रिहङ्गी की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 40,095.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 1,81,380.00 मूल्य के विभिन्न सब्जियों तथा धान के बीज उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 एवं 05944–235580 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 117 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान प्रभारी अधिकारी, एटिक एवं हैल्पलाईन पर उपस्थित वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

सफलता की कहानी:

धैर्य और अनुभव से खुशहाली का मंत्र



श्री पृथ्वीराज सिंह, ग्राम—बोहराकोट, विकास खण्ड—रामगढ़, जनपद—नैनीताल के रहने वाले 48 वर्षीय किसान हैं, जो दिल्ली में होटल में कार्यरत थे, लॉकडाउन के दौरान आप अपने गांव वापस आये और उन्नत कृषि करने की ठानी। इस क्रम में आपने समेटी, पंतनगर से उन्नत मत्स्य पालन प्रशिक्षण प्राप्त किया और 2000 मत्स्य बीज से ट्राउट मत्स्य पालन प्रारम्भ किया। आपने आगे चलकर भा.कृ.अ.प.— शीतजल मात्स्यकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल से भी मत्स्य पालन प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी कार्य कुशलता में वृद्धि की। वर्तमान में समुचित अंतराल पर मत्स्य विक्रय करते हुए तालाब में 2 से 3 हजार मछलियाँ रखते हैं। धीरे—धीरे मत्स्य पालन की बारीकियों को समझते हुए आपने पानी में बहने वाली विदेशी मछली रेनबो ट्राउट का पालन शुरू किया। एकीकृत कृषि का महत्व समझते हुए आपने 400 चूजों द्वारा कुकुट पालन, बगीचे में सेब, प्लम, कीवी आदि के पौधे लगाये जो टपक सिंचाई पद्धति से जुड़े हुए हैं। पंतनगर प्रवास के दौरान आपने वहाँ से धनियां की उन्नत प्रजाति पंत हरितिमा, मचान विधि से लौकी उत्पादन तकनीक देख कर इन्हें अपने यहां कार्यरूप में बदल रहे हैं। विकसित तकनीक अपनाने से पूर्व जहां आपकी वार्षिक आय बमुश्किल ₹ 20–25 हजार थी, वहीं अब कृषि के उपरोक्त सभी उद्यमों से आपकी वार्षिक आय लगभग ₹ 8.00 लाख हो गयी है। आय वृद्धि में काफी हद तक योगदान मत्स्य, फलोत्पादन एवं कुकुट पालन का है। इस प्रकार आप 'रिवर्स पलायन' की कहानी को चरित्रार्थ करते हुए क्षेत्र के अन्य युवाओं हेतु मार्गदर्शक के रूप में उभर रहे हैं।

निदेशक की कलम से

किसानों के आजीविका सुधार एवं आय बढ़ातरी ही कृषि एवं कृषि से जुड़े अधिकारियों एवं कृषि वैज्ञानिकों की सार्थकता सिद्ध करेगी। कृषि वैज्ञानिकों के साथ—साथ कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु राज्य सरकार भी तत्पर है। एवं सरकार द्वारा अनेक कृषक कल्याणकारी योजनाएं एवं अनुदान भी उपलब्ध कराया जा रहा है। मैं समस्त कृषकों से अपील करूंगा कि कृपया वे इन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करें। यद्यपि उत्तराखण्ड में पर्वतीय कृषि की अपनी जटिलताएँ हैं और इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनेक किसान कृषि के लाभकारी उद्यमों को अपनाकर आर्थिकी मजबूत कर रहे हैं। ये कृषक क्षेत्र के अन्य कृषकों हेतु आदर्श व प्रेरणास्रोत के रूप में भी उभर रहे हैं। इसके विपरीत बहुत से ऐसे भी कृषक हैं जो परम्परागत खेती करते आ रहे हैं, परिणाम स्वरूप उनके आर्थिकी में आशा के अनुरूप बढ़ातरी नहीं हो रही है। वैज्ञानिकों की वास्तविक परीक्षा इनके विकास की है। कृषि विज्ञान केन्द्र व पंतनगर मुख्यालय के वैज्ञानिक ऐसे काश्तकारों के लिए जनपद के आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण, अप्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ऑन फार्म ट्रायल, कृषक—वैज्ञानिक संवाद जैसे कार्यक्रम संचालित कर कृषकों को लाभान्वित कर रहे हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में वैज्ञानिकों का कृषक समुदाय के विकास हेतु कार्य करने पर उन्हें बधाई देता हूँ। पत्रिका को मूर्ख रूप देने वाले डा. बी. डी. सिंह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) की सराहना व धन्यवाद देना भी अपना कर्तव्य मानता हूँ।



(डा. जितेन्द्र क्वात्रा)

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी—उत्तराखण्ड

आभार

विभिन्न शोध संस्थानों द्वारा अनवरत रूप से उन्नत तकनीक विकसित किये जाते रहते हैं, परन्तु प्रायः इनका समुचित प्रचार—प्रसार न होने के कारण कृषक इनसे वंचित रह जाते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक शोध एवं प्रसार कार्यक्रम के बीच सेतु का कार्य करते हुए तकनीक हस्तान्तरण में महत्ती योगदान देते हैं। वर्तमान में कृषक डिजिटल कृषि तकनीक जैसे टोल फ्री हेल्प लाइन, इन्टरनेट, बल्क एस.एम.एस., वाट्सऐप, वीडियो कान्क्षेसिंग आदि का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे समस्या का प्रभावी समाधान मिलता है। पर्वतीय क्षेत्र में महिलायें जिनकी 'कृषि के रीढ़ की हड्डी' के रूप में पहचान है, समूह के माध्यम से डेयरी, कुकुट पालन, मशरूम, मसाले, मंडुवा, हल्दी, रामदाना आदि के मूल्यवर्धन से अपने आय संवर्धन के साथ—साथ अनेक अन्य को भी प्रगति की राह दिखा रही है। इस पत्रिका को तैयार करने में निदेशक प्रसार शिक्षा से निरन्तर प्रोत्साहन हेतु मैं उनका आभारी हूँ। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों, वैज्ञानिक तथा मुख्यालय के सभी वैज्ञानिक/कार्मिक का आभारी हूँ, जिन्होंने पत्रिका को तैयार करने में अमूल्य सहयोग दिया है। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अंतिम पेज पर अंकित फोन नम्बर अथवा मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।



धन्यवाद।

(डा. बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : dirextedugbp@gmail.com

हेल्प लाइन : 05944-234810, 235580

संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)